मौदथ निकाह और वलीमे के मौखे पर इस्लाह ए माशरह की फ़र्ज़ से इस पाम्फ्लेट को प्रिंट करवाने के लिए हम से राबता करे

निकाह के मुताल्लिख अहम मालूमात

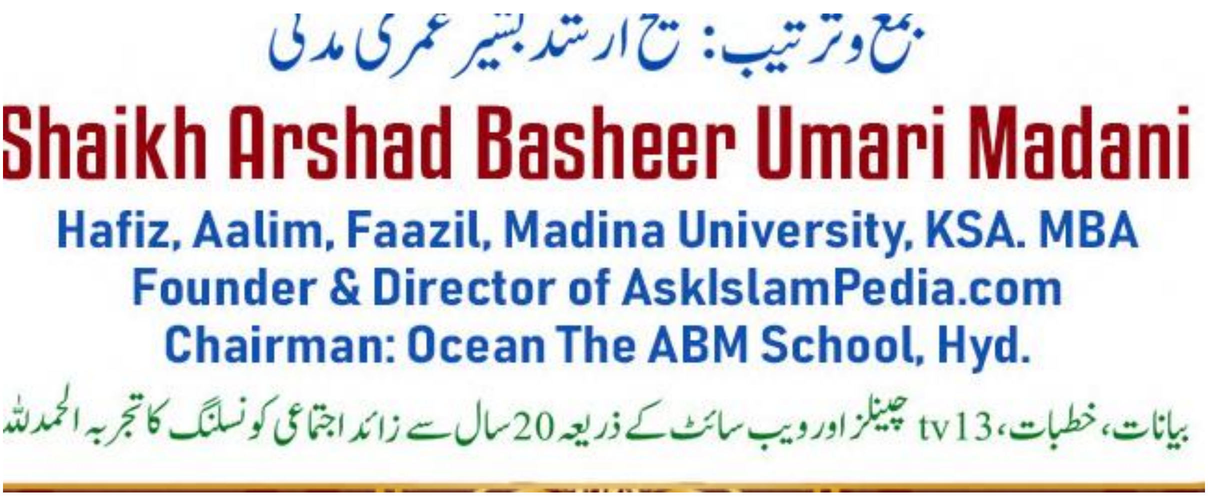

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

निकाह से मुताल्लिख अहम मालूमात

हर साहबे इस्तेतात को निकाह करने का हुकुम दिया गया है| जहान निकाह करना सुन्नत है वहां ये भी जरूरी है के निकाह सुन्नत तरीखे से किया जाये| जब निकाह हो जाए तो फिर शौहर बीवी दोनों को एक दूसरे के हुखूख अदा करने चाहिए|

A. निकाह से पहले

निकाह की अहमियत व फजीलत और तर्घीब :

1. जब कोई शख्स निकाह कर लेता है तो अपना आधा ईमान मुकम्मिल कर लेता है, इसे चाहिए के बाखी आधे ईमान के मामले में अल्लाह से डरता रहे| **(सहीह उल जामे:6148)**

2. निकाह मेरी सुन्नत है, पस जिसने मेरी सुन्नत से एराज़ किया उसका मुझ से कोई ताल्लुख नहीं| **(सहीह उल जामे:6807)**

3. निकाह के ज़रिये फख्र व फाखा का खात्मा| **(सूरा नूर:32)**

4. निकाह बाअस राहत व इत्मिनान| **(सूरा रूम:21)**

5. निकाह गुज़िश्ता अम्बिया की सुन्नत| **(सूरा राद:38)**

6. निकाह मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत| **(सहीह उल जामे:6807)**

7. निकाह निस्फ़ दीन| **(सहीह उल जामे:430)**

8. पाकदामनी की निय्यत से निकाह करने वाले के लिए मददे इलाही का एलान| **(तिरमिज़ी:1655, सहीह)**

9. निकाह मुहब्बत व उल्फत का बेहतरीन जरिया| **(इब्ने माजह:1847, सहीह)**

10. सालेह बीवी दुनिया का बेहतरीन सामान| **(मुस्लिम:1467)**

11. सालेह बीवी आदमी की खुश बख्ति की अलामत| **(सहीह तर्घीब:1914)**

निकाह की हिकमते :

1. इस्लामी निकाह में हैवानियत और इंसानियत में फर्ख|

2. ज़िम्मेदारी का अहसास|

3. बड़ी बीमारियों से पाक माशरे की तशकील|

4. पाकदामनी|

5. नफसानी राहत|

6. नस्बो की हिफाज़त|

7. नस्ल इंसानी का बखा|

8. कसरते नस्ल और तादाद|

9. ज़िम्मेदार और ज़िम्मेदारी का अहसास|

10. जौजैन की माबैन उन्स व मुहब्बत|

11. मौदत व रहमत|

12. जौजैन एक दूसरे के लिए लिबास है| **(सूरा बखरह:187)** यानी एक दूसरे के ऐबो को छुपाते है और एक दूसरे की जीनत का जरिया है|

13. बरोज़ महशर उम्मत की कसरत पर नबी ﷺ की ख़ुशी|

14. दीन की तब्लीघ व नश्र व इशात|

15. रह्बानियत से नजात|

16. इत्तेबा ए सुन्नत का मुज़ाहेरा|

औसाफ जौजैन और शादी के इंतेखाब में ध्यान रखने की चीज़े :

(शरीके हयात इंतेखाब करने के चंद रहनुम उसूल)

1. दीनदार| **(बुखारी:5090)**

2. अच्छे माहौल का ________

3. संजीदा|

4. मख्सदे हयात से वाखिफ|

5. दीनी इल्म का शघफ|

6. माली और अज्वाजी जिम्मेदारियों का अहसास|

7. शादी से पहले देखना| **(सूरा निसा:3)**

8. तय्यिबो और तय्यिबात रहना, खबीसो और खबीसात से बचना|

9. इस्तेखारह|

10. मशवरह|

11. दुआ

12. मुअतदिल जांच पड़ताल|

13. तवक्कल मा असबाब|

14. वदूद और वलूद लड़की (खानदान से पता चलता है के वफ़ा शआर और साहबे औलाद होने के लायेख है या नहीं)|

15. ऐब और महलक बीमारियों को ना छुपाये|

16. मस्लिहत को अपनाए, शौख के पीछे ना जाए|

17. मशवरा देने वाले अमानत का मुजाहेरा करे|

18. जहां घीबत जायज़ है उसमे से एक है निकाह के अहम मशवरे पर हर अच्छी या बुरी बात बता दे ताके फैसला सोच समझ कर किया जा सके, बाद में निकाह टूटने से बेहतर है पहले ही clearity आ जाए| **(खूलू खवलन सदीदा)**

19. सलाहियत और सालेत|

20. छोटो पर शफख्खत और बड़ो का एहतेराम करने वाले|

21. दीन के लिए खुर्बानिया देने वाले|

22. एक दूसरे का खयाल रखने वाले|

23. ग़रीब और जरूरत मंद का ख़याल रखने वाले|

24. अखीदा सहीहा, शिर्क व बिदत से पाक, आमाल ए सालेह के पैकर, बद अख्लाखी और बुरी आदत से पाक|

25. इल्म, अमल, दावत व इस्लाह और सबर के हामिल|

26. arabic text **(इब्ने हिब्बान:4163, सहीह उल जामे:660)**

तरजुमा : "जब औरत पांच नमाज़े अदा करे, और रमजान के रोज़े रखे और अपनी शर्म गाह की हिफाज़त करे, और अपने खाविंद की इतात करती हो तो उसे कहा जाएगा : तुम जन्नत के जिस दरवाज़े से भी चाहो जन्नत में दाखिल हो जाओ|"

27. लड़का नुफ्खा, सकना, कस्वा, और माली ज़िम्मेदारिया उठाने के खाबिल हो|

28. ला तजारोहन, किसी भी खिसम का ज़रर ना पहुचाये, शरियत के ऐतेबार से, कोई ________ ऐब को छुपाकर ज़रर में डालना, जैसे ना मरदानगी वग़ैरा| मतूल कतब या उलमा ए रासिखीन से मर्जा करे|

इस्तेखारा की ज़रुरत व अहमियत :

इस्तेखारा दो चीजों में से अच्छी चीज़ को तलब करना है| और सलातुल इस्तेखारा ये है के बन्दा दो रकात दिन या रात में किसी भी वख्त पढ़े, इनके अन्दर सूरा फातिहा के बाद जो चाहे पढे और सलाम फेरने के बाद अल्लाह ताला की हम्द व सना करे और नबी करीम ﷺ पर दरूद पढ़े| फिर वो दुआ पढ़े जो सहीह बुखारी में जाबेर रज़िअल्लाहुअन्हु से मरवी है :

अन जाबिरी रज़िअल्लाहुअन्हु, खाल : कानन नाबिय्यु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम युअल्लिमुना लिस तिखारा फिल उमुरि कुल्लिहा, कास्सूरति मिनल खुरआनि : इजा हम्म बिल अमरी फलयरका रकातैन, सुम्म यखूल :

{अल्लाहुम्म इन्नानी अस तखीरुक बि इल्मिक, व अस तख्दिरुक बि खुदरतिक, व अस अलुक मिन फज्लिकल अज़ीम, फ इन्नक तख्दिरू वला अख्दिरू, व तालमु वला आलमु, व अन्त अल्लामुल घुयूब, अल्लाहुम्म इन कुंत तालमु अन्न हज़ल अम्र खैरुन ली फी दीनी व माशी व आखिबिहि अमरी, औ खाल फी आजिलि अमरी, व अजलिहि, फख्दुरहु ली, व इन कुंत तालमु

अन्न हाज़ल अम्र शर्र ली फी दीनी व माशी व आखिबिही अमरी, औ खाल फी आजिलि अमरी, व अजलिही, फसरिफ्हु अन्नी वस रिफ्नी अन्हु, वखदुर लिल खैर हैसु कान, सुम्म रजिनी बिहि} वयुसम्मी हाजतह|" (बुखारी:6382)

जाबेर रज़िअल्लाहुअन्हु ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ हमें तमाम मामलात में इस्तेखारा की तालीम देते थे, खुरआन की सूरत की तरह (नबी करीम ﷺ ने फरमाया) जब तुम में से कोई शख्स किसी (मुबाह) काम का इरादा करे (अभी पक्का अज्म न हुआ हो) तो दो रकात (नफिल) पढ़े, उसके बाद यू दुआ करे के, ऐ अल्लाह! मै भलाई माँगता हूँ, तू इल्म वाला है, मुझे इल्म नहीं और तू तमाम पोशीदा बातो को जानने वाला है, ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है के ये काम मेरे लिए बुरा है मेरे दीन के लिए, मेरी ज़िन्दगी के लिए, और मेरे अंजाम कार के लिए या ये अलफ़ाज़ फरमाये, "फी आजिल अम्री व आजिलह" तू उसे मुझसे फेर दे और मुझे उससे फेर दे और मेरे लिए भलाई मुखद्दर करदे जहां कही भी वो हो और फिर मुझे उससे मुतमइन करदे (ये दुआ करते वख्त) अपनी ज़रुरत का बयान कर देना चाहिए|

1. जब इंसान को कोई अहम मसला दर पेश हो तो वो फ़ौरन इस्तेखारा की निय्यत (ज़हन बनाये) करे|

2. नमाज़ की तरह मुकम्मिल वजू करे|

3. फ़र्ज़ नमाज़ के अलावा दो रकात नमाज़ अदा करे|

4. नमाज़ से फारिघ होने के बाद इस्तेखारा की मखसूस दुआ पढ़े|

5. दुआ के शुरू में अलहम्दुलिल्लाह ...... और फिर आप ﷺ पर दरूद व सलाम पढ़े|

सलातुल इस्तेखारा से मुताल्लिख चंद मालूमात :

1. दिन और रात कभी भी इस्तेखारा कर सकते है|

2. सलाम फेरने के बाद दुआ इस्तेखारा करनी चाहिए, सलाम से पहले भी कर सकते है, जैसा के इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह ने इस्तेद्लाल किया है|

3. ये अमल सुन्नत है, फ़र्ज़ नहीं|

4. जब तक इत्मिनाने खल्ब ना हो इस्तेखारा कर सकते है|

5. तीन मरतबा अल्लाह के नबी दुआ मांगते थे, इसलिए तीन मरतबा करना चाहे तो कर सकता है, एक मरतबा भी काफी है|

6. ये अमल छोटे बड़े सभी मसायेल के लिए मुफीद है|

7. मुस्तख्बिल की रहनुमाई और अल्लाह की मदद के लिए|

8. जो मशवरा और इस्तेखारा करे वो नादिम नहीं होता|

9. इस्तेखारा का जवाब अगर अच्छा हो अंगूर से वरना कांटे से आता है, ये सब बे बुनयादी बाते है|

10. सफ़ेद कपड़े में नमाज़ और सफ़ेद में सोना बे दलील है|

11. जिस हदीस में बयान किया गया के इस्तेखारा के बाद इत्मिनाने खल्ब हासिल होता है वो हदीस ज़ईफ़ है, इब्ने तैमिया अलबत्ता इस्तेखारा की दुआ में "arabic text" से पता चलता है के इसका मानी सहीह है, यानी दिल में इत्मिनान की कैफियत तारी होना भी एक निशानी है, वल्लाहु आलम|

12. इस्तेखारा की एक अलामत शरए सद्र भी है, लेकिन उसी को एक खतई अलामत समझना और मशवरा या दीगर तजुरबाती उमूर से इस्तेफ़ादा ना करना ग़लत है, क्यों के शरए सद्र वाली हदीस ज़ईफ़ है| उमूमी नुसूस से शरए सद्र एक अलामत तो बन सकती है, लेकिन इसे ही हतमी व आखरी मानना और उसे ही असल बुनियाद और फैसले का नाम देना ग़लत है|

13. इस्तेखारे का नतीजा मालूम करने की कई अलामते है : 1) शरये सद्र, 2) मैलान पाया जाना, 3) असबाब और काम बनते चले जाना|

14. इस्तेखारा से खब्ल मशवरा करे, और मशवरा देने वाले दो सिफत के हामिल हो : 1) नासेह (खैर ख्वाह), 2) अलीम (जानकार)|

15. मुस्लिम के 6 हुखूख में से एक सहीह मशवरा देना भी है|

arabic text **(सहीह मुस्लिम:2162)**

तरजुमा : अबू हुरैरह रज़िअल्लाहुअन्हु से रिवायत है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : "मुसलमान के हख मुसलमान पर छ (6) है|" लोगो ने अर्ज़ किया, वो क्या? या रसूलुल्लाह! आप ﷺ ने फरमाया : "जब तू मुसलमान को मिले तो उसको सलाम कर और जब वो तेरी दावत करे तो खुबूल करे और जब तुझसे मश्वरा चाहे तो अच्छी सलाह दे, जब छींके और 'अलहम्दुलिल्लाह' कहे तो तू भी जवाब दे (यानी, 'यरहमुकल्लाह' कहे) और जब बीमार हो तो उसकी बीमार पुरसी को जा और जब मर जाए तो उसके जनाज़े में शिरकत कर|"

16. इस्तेखारा के बावजूद नाकामी हो तो उसका जवाब है : 1) अल्लाह की हिकमत, 2) बाज़ अवखात दुआ आखिरत में सवाब की शकल में मिलती है, 3) मोमिन बुरे हाल में कहे अल्हम्दुलिल्लाह अला कुल्लि हाल और खद्दरल्लाह / माशा अल्लाह कहे मुसीबत पर, अगर ऐसा होता तो ऐसा ना होता वग़ैरा ना कहे, और खैर में अल्हम्दुलिल्लाह कहे|

- निकाह से खब्ल ये जानना ज़रूरी है के निकाह किससे करना जाएज़ है और किससे नहीं, कौनसे रिश्ते महरम है और कौनसे ना महरम|

- महरम व ना महरम रिश्तो की तफसील :
- अब्दी महरमात : ----------- (निसा:23)
  1) नस्बी मह्रमात (सात है) : माये, बेटिया, बहने, फूपिया, खालाये, भतीजी और भांजी|
  2) रजाई मह्रमात (सात है) : रजाई माये, रजाई बेटिया, रजाई बहने, रजाई फूपिया, रजाई खालाये, रजाई भतीजिया, रजाई भांजिया|
  3) सुसराली मह्रमात (चार है) : सास, बहू, बाप की बीवी और रबीबह|
  4) लान : जिस मर्द या औरत के साथ एक बार लान हो जाए| **(अबू दावूद:2250)**
- मौखिखी मह्रमात :
  1) दो बहनों को ब एक वख्त निकाह में रखना| **(निसा:23)**
  2) बीवी के साथ उसकी फूपी या खाला को ब एक वख्त निकाह में रखना| **(बुखारी:5108)**

3) मंकूह (जो किसी और के निकाह में हो)|
4) तीन मर्तबा तलाख शुदा बीवी जब तक शरई तौर पर हलाल ना हो जाए| **(सूरा बखरह:230)**
नोट : एक मजलिस में ब एक वख्त तीन तलाख देना इस्लामी तरीखे से हराम है, हराम है, हराम है|
5) ग़ैर मुस्लिम मर्द या ग़ैर कितबियह औरत से निकाह| **(सूरा बखरह:221)**
6) ब एक वख्त चार से ज़्यादा बीविया (उम्मती के लिए) **(सूरा निसा:3)**
7) अहराम की हालत में निकाह| **(मुस्लिम:1409)**
8) बदकार जब तक तौबा ना करे| **(सूरा नूर:3)**

- निकाह की ममनून खिस्मे :
  1) निकाह मुता| **(बुखारी:5115)**
  2) निकाह तहलील / हलाला| **(तिरमिज़ी:1120)**
  3) निकाह शघार की ना जायज़ शकल| **(मुस्लिम:1415)**
  4) मुअतदाह का निकाह| (जो औरत इद्दत में हो) **(सूरा बखरह:235)**
  5) मकरूह निकाह (ज़बरदस्ती का निकाह)| **(सूरा बखरह:256)**

- निकाह से खब्ल बाज़ नसीहते और अहम् तालीमात :
  1) किसी के पैघामे निकाह पर अपना पैघामे निकाह भेजना ममनू है| **(बुकहरी:5142)**
  2) निकाह में बिला वजह ताखीर मना है|
  3) मंगनी का मतलब सिर्फ निस्बत तै हो जाना और ज़बानी अहद व पैमान है, बाखी फुज़ूल रस्मे इनसे बचना ज़रूरी है, ख़ास तौर से मर्द को सोने की अन्घूटी देना और दावत का इस्राफ वाला सिलसिला, निकाह को इस्राफ से बोझ बना देने वाली ये रस्म ममनू है|
  4) मंगनी को बिला वजह तोड़ देना अहद व वादे को तोड़ने की मानिंद है और इस पर अमल निफाख का गुनाह भी लाजिम आ सकता है, लिहाज़ा खिलवाड़ से बचे, किसी को ठेस पहुचाने से बचे|
  5) दीनदार लड़के / लड़की का इंतेखाब कीजिये| **(बुखारी:5090)**

arabic text

तरजुमा : नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया के औरत से निकाह चार चीजों की बुनियाद पर किया जा सकता है| उससे माल की वजह से और उसके खानदानी शर्फ़ की वजह से और उसकी खूबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से और तू दीनदार औरत से निकाह करके कामयाबी हासिल कर, अगर ऐसा ना करे तो तेरे हाथो को मिट्टी लगेगी (यानी अखीर में तुझ को नदामत होगी)|

6) दीन के बजाये किसी और चीज़ को तर्जीह देंगे तो नुख्सान उठाना पड़ेगा| **(तिरमिज़ी:1084)**
7) निकाह से खब्ल लड़के को इजाज़त है के लड़की को देखे, लेकिन लड़के के मर्द रिश्तेदार व अखारिब को इजाज़त नहीं|

8) सद्खात व खैरात के ज़रिये से लड़के की मदद की जा सकती है, अगर वो महर देने की इस्तेतात ना रखता हो| **(बिन बाज़)**
9) अंगूठी या छल्ला शौहर या बीवी रिश्ते की हिफाज़त की निय्यत से डाले तो तमीम है (ना जायज़ तावीज़ की खिसम)| अगर वो नीयत ना हो तो तश्बा नसारी है वो भी ग़लत है|
10) हायेज़ा का निकाह दुरूस्त है, लेकिन हैज़ की हालत में अज्वाजी ताल्लुखात जायज़ नहीं|

- मुन्किरात व मुखालिफात जिनसे बचना ज़रूरी है :

1) रस्म व रिवाज|
2) साचक|
3) जहेज़|
4) मंगनी की दावत और इस्राफ वाले खर्च|
5) मेहंदी और हल्दी की रस्म| (दुल्हन का मेहंदी लगाना जायज़ है, लेकिन इज्तेमाई रस्म के तौर पर करना ग़लत है)|
6) सलामिया देने की रस्म|
7) मंगेतर को बीवी की तरह समझकर आज़ादाना मेल झोल रखना और हिजाब की पाबंदी की मुखालिफत करना|
8) सूदी खर्ज़े|
9) झूठ (आम तौर पर लड़के और लडकियों की सलाहियतो से मुताल्लिख बोला जाता है)|
10) यादगार या ममनू तस्वीर (जिसमें शकल व सूरत को बड़ा चडा कर पेश किया जाता है)|
11) फुजूल खर्ची|
12) शिर्क व बिदात और हराम कामो से हर हाल में बचे|
13) हर एक का हख अदा करे, हख तल्फी से परहेज़ करे|
14) मौसिखी, नाच गाने, फवाहिश का इर्तेकाब|
15) पड़ोसियों को बिला वजह शरई तकलीफ दे|
16) रियाकारी, तकब्बुर व इस्राफ|

B. निकाह के दौरान (During Nikah)

- अरकान ए निकाह : (अरकान ए निकाह तीन है)

1) जौजैन का वजूद और उनका उन तमाम मवाने (रूकावटो) से खाली होना जिसकी वजह से निकाह सही नहीं होता (मह्रमात यानी किन से शादी जायज़ है और किनसे नहीं ये मसायेल जानना ज़रूरी है, इसी तरह निकाह के हराम तरीखों से बचना चाहिये)|
2) हुसूले ईजाब (रजामंदी के साथ) : वली या उसका वकील मिसल खाजी लड़की की रजामंदी के बाद लड़के से यूं कहेगा, मै तेरा निकाह इतने महर पर फला लड़की से करता हूँ, तू ने खुबूल कया?

3) हुसूले खुबूल (रजामंदी के साथ) : शौहर या उसके खायम मखाम किसी शख्स की तरफ से सादिर होने वाला ये जुमला के, मैंने इस निकाह को रजामंदी के साथ खुबूल किया (________ सालेह फौजान)

- शुरूते निकाह : (शुरूते निकाह चार है)
  1) ताईन : लड़का लड़की की ताईन, इशारा, नाम, या वस्फ़ के ज़रिये|
  2) शौहर और बीवी की रजामंदी (कुवारी (बाकेरह) की रजामंदी उसी की ख़ामोशी के ज़रिये समझी जा सकती है, जबके ग़ैर कुवारी (पैबह) की रजामंदी के लिए वाजेह इज़्न यानी इजाज़त ज़रूरी है, ख़ामोशी काफी नहीं है)| **(मुस्लिम:1421)**
  नोट : ज़बरदस्ती निकाह करवाने से बचे, ये जाएज़ नहीं मरदूद है|
  3) लड़की के लिए वली की रजामंदी और इजाज़त| **(अबू दावूद:2085)**
  {एक खौल के मुताबिख ये रुकुन है}
  4) दो आदिल गवाहों की मौजूदगी| **(सहीह जामे:7557)**

- वाजिबात ए निकाह : (वाजिबात ए निकाह दो है)

  1) महर (सूरा निसा:4) {एक खौल के मुताबिख ये शर्त है}
  2) वलीमा| **(सहीह बुखारी:5155)**

- वली कैसा हो?

मर्द, आखिल, बालिघ, आज़ाद, मुस्लिम, आदिल (फासिख ना हो, भरोसामंद और खैर ख्वाह हो) और रश्दा (अच्छे बुरे की तमीज) रखने वाला हो|

- एलान ए निकाह :

  आत में उसका ताकीदी हुकुम आया है|

- निकाह के मुबाहात :

  1) अच्छे कपडे पहनना|
  2) ग़ैर ज़रूरी बालो की सफाई|
  3) अपनी इस्तेतात में रह कर अच्छा वलीमा करना जो इस्राफ व तब्जीर से खाली हो|
  4) निकाह अलग और रुखसती या विदाई अलग अलग करना जायज़ है|
  5) फितने का डर ना हो तो छोटी बच्चिया दफ बजा सकती है, खवातीन में और ऐसे अश्यार पढ़ सकती है जो फहश और शिर्क से पाक हो|

- दौरान ए निकाह बाज़ नसीहते और अहम तालीमात :

1) दुल्हा व दुल्हन को इन अलफ़ाज़ में मुबारक कह दे :
बारकल्लाहु लक व बारिक अलैक व जमा बैनकुमा फी खैर (अबू दावूद:2130)
नुक्ता अव्वल : जो तुम्हारे हुखूख है और जो तुम्हारी जिम्मेदारिया है अल्लाह दोनों में बरकत नाजिल फरमाये और नुख्सान से बचाए|
नुक्ता सानी : मवाफिख हालात में खैर हासिल हो, मुखालिफ हालात में शर से महफ़ूज़ रहो और खैर पर दोनों जमे रहो|
2) शादी के मौखे पर नेवते या तोहफे देने को लाज़मी समझना ग़लत है, अलबत्ता ख़ुशी से जाएज़ है|
3) लड़के वाले जब लड़की वालो के यहाँ जाए तो इतनी तादाद में ही जाए के उनका इस्तेख्बाल लड़की वालो के लिए ज़हमत ना बन जाए, लड़के वालो का लड़की वालो से इस तरह का मुतालिबा करना के हमारे इतने सौ आदमी आयेंगे और आप को ये ये खाने खिलाने होंगे ना जायज़ और ग़लत है, इसकी रोक थाम के लिए समाज के जिम्मेदारो को आगे बढ़ के आना चाहिए| जहेज़ का मुतालबा या दावतो का मुतालबा अगर लड़की वाले पर बोझ है जिसकी वजह से वो लड़की की शादी नहीं कर पा रहे है तो ये सरासर ज़ुल्म व हराम है|
4) बनाव सिंगार की जायज़ और ना जायज़ हुदूद को मालूम करते हुए जाएज़ तरीखा इख्तियार किया जाए| वज़ू उर नमाज़ से रोकने वाले बनाव सिंगार से भी बचे और बे हयाई से बचे|
5) बे पर्दगी और बे हयाई से बचे|
6) दावत वलीमा में शरीक हज़रात की दावत करने वाले के लिए दुआ : **अल्लाहुम्म, बारिक लहुम फी मा रज़खतहुम, वघफिर लहुम वर हम्हुम (सहीह मुस्लिम:2042)**
तरजुमा : "अल्लाह बरकत दे इनकी रोज़ी में और बक्श दे इनको और रहम करे इन पर|"
अल्लाहुम्म अत इम मन अत अमनी, व अस्खि मन अस्खानी (सहीह मुस्लिम:2055)
तरजुमा : "ऐ अल्लाह, खिला उसको जिसने मुझे खिलाया और पिला उसको जिसने मुझे पिलाया|"
अफ्तर इन्दकुमुस सायिमून, व अकल तआ मुकुमुल अबरार, व सल्लतु अलैकुमुल मलाइकह (अबू दावूद:3854)
तरजुमा : "तुम्हारे पास रोज़ेदार इफ्तार किया करे, नेक लोग तुम्हारा खाना खाए और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआये करे|"
7) इस्तेतात में रहकर वलीमा करना और महर कम से कम रखना खैर का काम है| **(सहीह उल जामे:3300)**
8) आज के दौर में निकाह लाखो में हो रहा है, जबके असल में महर की मुख़्तसर सी रखं और वलीमा की मुख़्तसर सी जियाफत चंद सौ रुपियो में हो जाती है|
9) जहाँ सब लोग जमा हो सकते हो, वहां निकाह किया जा सकता है, चाहे वो मस्जिद हो या ग़ैर मस्जिद|
10) पलकों के बाल उखाड़ना जायज़ नहीं, सिवाए उसके के नफरत आमेज या महीब लग रहे हो या ज़रर रसा हो तो इलाज की नियत से इतना काटे के ऐब और ज़रर दूर हो जाए| **(इब्ने बाज़)**
11) चालीस यौम से ज्यादा नाखुन या बाल ना बढाए| **(मुस्लिम:258)**
12) औरत का घुंघरू बाँधना जायज़ नहीं| **(सूरा नूर:31)**
13) काले रंग के खिजाब से बचना चाहिए| **(मुस्लिम:2102)**

14) धोका, खियानत से हर मरहले में बचे| **(मुस्लिम:102)**
15) मर्द के लिए चांदी की अन्घूटी पहनना जायज़ है| **(अहमद:6518)**
16) मर्द के लिए सुरमा लगाना जायज़ है| **(सिलसिला सहीहा:633)**
17) महरे मवज्जल (बाद में) की भी इजाज़त है, लेकिन महर मुअज्जल (फ़ौरन) अदा करने पर उभारा जाए| **(बुखारी:5126)**
18) औरत अपना महर माफ़ भी कर सकती है| **(सूरा निसा:3)**
19) हुकूमती रस्मी और खानूनी कारवाई / लिखाई पढाई मज़बूत तरीखे से फरमा ले, इसमें सुस्ती और काहेली ना करे और दस्तावेजात सम्भाल कर रखे| **(सूरा बखरह:282, सूरा मायिदा:1)**
20) अख्दे निकाह और रुखसती में वख्त की महूलत दे सकते है|
21) दीनी कफ़ू का ख़याल रखा जाए| इसी लिए मुस्लिम लड़की की ग़ैर मुस्लिम से निकाह ना करे और मुस्लिम मर्द ग़ैर किताबिया से निकाह ना करे| इसकी रौशनी में बे नमाज़ी और बद दीन व बद किरदार से परहेज़ करे|
नोट : कफ़ू के नाम पर बिरादरी वाद, तब्खायी, खबायली, ज़बानी, नस्ली इम्तियाज़ात और अस्बियत का रंग देना हराम है| **(सूरा हुजुरात:13)**
22) वो ऐब जो अज्वाजी ताल्लुखात के लिए रूकावट हो और इसी तरह वो गंभीर बीमारिया जो मुतादी हो ना छुपाये जाए बल्के, "खूलू खौलन सदीदा" पर अमल किया जाये और अहले इल्म से मशवरा लिया जाये| **(मज्मू फतावी इब्न तैमिया:32/61)**
23) महर की खलील और कसरत मिख्दार शरीयत ने मुताइन नहीं की, जो भी रजामंदी से तै पाए जायज़ है, अलबत्ता कम महर बरकत की ज़मानत है| **(सिलसिला सहीहा:1842)**

- निकाह में ताखीर की वजूहात

1) महर की रखम का बहुत ज्यादा होना|
2) ग़ैर शरई रस्म व रिवाज|
3) नौजवानों की बे राह रवी|
4) नौजवानों का ग़ैर जिम्मेदाराना किरदार|
5) जहेज़ की लानत|
6) बेजा रस्म व रिवाज की कसरत, इस पर वला व बरा की हद तक इह्तेराम|
7) लड़की और लड़के की शादी ग़ैर माखूल वजूहात की बुनियाद पर टालना जैसे लड़के की अभी उमर क्या है?/ हज के बाद / फलान की शादी के बाद / आला नौकरी / आला तालीम / आला मुखाम व मर्तबा के बाद|
8) ग़ैर हखीखी तसव्वुरात व तखीलात, लड़का और लड़की के मुताबिख जोड़ा नहीं मिला क्यों के ग़लत तसव्वुरात बैठा लिए है या ग़लत मियारात|
9) लड़का लड़की को ऐसी शादी के लिए ज़बरदस्ती करना जहां वो राज़ी नहीं, नतीजे में शादी से ही कराहत|
10) शर्तों और मांग की कसरत|
11) बहुत ज्यादा तहखीख व तफ्तीश और कसरते सवालात|
12) बिला वजह शक्की और वहमी मिजाज|
13) शबहात और शहवात की कसरत|

14) भटके हुए या बरबाद खौमो की मशाबहत|
15) खयाली पलाव या तसव्वुराती खदशात|
16) ग़ैर माखूल व ग़ैर हखीखी डर या तदबीर|
17) सुस्ती व काहेली और रोज़ी की तलाश में कमा हख्ख मेहनत ना करना या ग़ैर हखीखी खयालाते रिज्ख|
18) बेरोज़गारी और सुस्ती व काहेली का नतीजा|
19) महंगी दावते और शादिया|
20) दुआ और इबादत की कमी से ज़िन्दगी में रूकावटो की कसरत|
21) गुनाहों की कसरत से हलाल में दिल नहीं लगता|
22) हराम में शघफ से हलाल का मज़ा जाता रहता है|
23) हलाल रास्तो को छोड़ कर ग़ैर फितरी व ग़ैर शरई तरीखे|
24) आदात शै व सोहबत शै का नतीजा|
25) हुखूख अल्लाह व हुखूख उल इबाद की अहमियत को ना समझना|
26) निस्फ़ दीन की अहमियत को ना समझना|
27) माशरे की बे हिसी और फहाशियत|
28) बुराई को फैशन और अच्छाई को दखिया नौवियत समझना|
29) अच्छे बुरे की तमीज खो देना|
30) तौहीद, रिसालत और आखिरत के इल्म से घफ्लत|

- खुत्बा ए निकाह और अस्बाख :
  1) खुत्बा ए निकाह सिर्फ दुल्हा और दुल्हन को ही नहीं बल्के तखरीब ए निकाह में शरीक सारे अहले ईमान को मुखातिब करके तखरीब ए निकाह को महज़ एक ऐश व तरब की मजलिस ही नहीं रहने देना बल्के इसे एक इन्तेहाई परोखार और संजीदा इबादत का दर्जा दे देता है|
  2) खुत्बा ए निकाह गोया पूरी ज़िन्दगी का एक दस्तूर है जो नये खानदान की बुनियाद रखते हुए अरकाने खानदान को अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से अता किया जाता है|

- खुत्बा ए निकाह में तिलावत करदा आयात और उनसे माखूज़ चंद नूकात :

"इन्नल हम्द लिल्लाही नहमदुहू व नस्तईनुहू व नऊजु बिल्लाहि मिन शुरूरी अन्फुसिना व मिन सय्यिआति आमालिना मय यहदिल्लाहु फला मुज़िल्ल लहू व मय युज़लिल फला हादिय लहू अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू"

अऊजु बिल्लाही मिनश्शैतान निर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम

{या अय्यु हल्लजीन आमनुत्तखुल्लाह हख्ख तुखातिही वला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून }

{या अय्युहन्नासुत्तखू रब्बकुमुल्लज़ी खलखकुम मिन्नफ़सिव वाहिदह, व खलख मिन्हा जौजहा व बस्स मिन्हुमा रिजालन कसीरव व निसा अ वत्तकुल्लाहल्लज़ी तसालून बिही वल अरहाम इन्नल्लाह कान अलैकुम रखीबा}

{या अय्युहल्लज़ीन आमानत्तखुल्लाह वखूलू खौलन सदीदा, युस्लिह लकुम आमालुकुम व यघफिरलकुम जुनूबकुम व मय युतिइल्लाह व रसूलहू फखद फाज़ फौजन अजीमा} अम्मा बाद :

फ इन्न खैरल हदीसि किताबुल्लाह, व खैरल हदयि हुदाया मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, व शर्रल उमूरि मुहदसातुहा, व कुल्ल मुहदसतिन बिदाअ, व कुल्ल बिदाअतिन ज़लालह, व कुल्ल ज़लालतिन फिन्नार|

- **आयात का तरजुमा मुलाहिजा फरमाए :**

{या अय्यु हल्लजीन आमनुत्तखुल्लाह हख्ख तुखातिही वला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून} (सूरा आले इमरान:102)

मोमिनो! खुदा से डरो जैसा के उससे डरने का हख है और मरना तो मुसलमान ही मरना|

O you who have believed, fear Allah as He should be feared and do not die except as Muslims [in submission to Him].

{या अय्युहन्नासुत्तखू रब्बकुमुल्लज़ी खलखकुम मिन्नफ़सिव वाहिदह, व खलख मिन्हा जौजहा व बस्स मिन्हुमा रिजालन कसीरव व निसा अ वत्तकुल्लाहल्लज़ी तसालून बिही वल अरहाम इन्नल्लाह कान अलैकुम रखीबा} (सूरा निसा:1)

ऐ लोगो! अपने परवरदिगार से डरो, जिसने तुम्हे एक जान से पैदा किया और उसी से उसकी बीवी को पैदा करके उन दोनों से बहुत से मर्द और औरते फैला दी, उस अल्लाह से डरो जिसके नाम पर एक दूसरे से मांगते हो और रिश्ते नाते तोड़ने से भी बचो, बेशक अल्लाह ताला तुम पर निगहबान है|

O mankind, fear your Lord, who created you from one soul and created from it its mate and dispersed from both of them many men and women. And fear Allah, through whom you ask one another, and the wombs. Indeed Allah is ever, over you, an Observer.

{या अय्युहल्लज़ीन आमानत्तखुल्लाह वखूलू खौलन सदीदा, युस्लिह लकुम आमालुकुम व यघफिरलकुम जुनूबकुम व मय युतिइल्लाह व रसूलहू फखद फाज़ फौजन अजीमा} (सूरा अहज़ाब:70-71)

तरजुमा : ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी सीधी (सच्ची) बाते किया करो, ताके अल्लाह ताला तुम्हारे काम सवार दे और तुम्हारे गुनाह माफ़ फरमा दे और जो भी अल्लाह और उसके रसूल की ताबेदारी करेगा उसने बड़ी मुराद पा ली|

O you who have believed, fear Allah and speak words of appropriate justice. He will (then) amend for you your deeds and forgive you your sins. And whoever obeys Allah and His Messenger has certainly attained a great attainment.

3) खुतबा ए निकाह की तीनो आयात में चार मर्तबा तख्वा की ज़बरदस्त ताकीद की गयी है| इस मौखे पर तख्वा की इस खदर ताकीद का मतलूब ये है के इन्तेहाई ख़ुशी के मौखे पर भी इन्सान का दिल, दिमाघ, जिस्म व जान अल्लाह ताला और उसके रसूल के हुकुम के ताबे रहने चाहिए, शैतानी और हैवानी अफकार व आमाल इन पर ग़ालिब नहीं आने चाहिए, नीज आने वाली ज़िन्दगी में मर्द को औरत के हुखूख के मामले में और औरत को मर्द के हुखूख के मामले में अल्लाह से डरना चाहिए|
4) निकाह का ईमान और तख्वा से गहरा ताल्लुख है| **(-----)**
5) तख्वा का तखाज़ा है के तौहीद, रिसालत और आखिरत की बुनियाद पर तरबियत की जाए|
6) "वला तमूतुन्न इल्ला व अन्तुम मुस्लिमून" अगर मौत आ जाए तो अल्लाह की रजामंदी की हालत में आये, अल्लाह की नाराजगी में ना आये, इस्लाम और इतात की हालत में आये|
7) सूरा निसा की पहली आयत एक में "रब" की सिफत को याद दिलाया जा रहा है| जो नौजवान परेशान होते है और शादी नहीं करते उन्हें याद रहना चाहिए के खाने पिलाने वाला अल्लाह है|
8) ज़िन्दगी के मसायेल और मुश्किलात में अल्लाह ताला से मदद तलब करने की तालीम दी गयी क्यों के वो रब और पालनहार है| **(रब्बकुमुल्लज़ी.....)**
9) **"मिन नफ्सिव वाहिदह"** तुम्हे अपने रंग, खबीले या ज़बान पर तकब्बुर करने की ज़रुरत नहीं, सब के माँ बाप एक ही है| घुरूर, तकब्बुर और तास्सुब (Racism) आज के दौर की जंगो और दहशत गर्दी की अहम् वजह है, इस ज़हरीले दरख़्त को जड़ से उखाड़ा गया है|
10) रिश्ते अल्लाह की नेमत है, उनको बनाये रखे| **(वत्तखुल्लाहल्लज़ी तसाअलून बिही वल अरहाम)**
11) जिन रिश्तो को अल्लाह के नाम पर जोड़े हो उन के हुखूख अदा करो, उनको तोड़ने से बचो, रिश्तो के बारे में खियामत में बाज़ पुर्स होगी|
12) अल्लाह रब्बुल आलमीन हमारे सारे मामलात का निगरान है, इसका हमें अहसास रहना चाहिए| **(इन्नल्लाह कान अलैकुम रखीबा)**
13) **"इन्नल्लाह कान अलैकुम रखीबा"** शौहर कहता है मेरी चलेगी, बीवी कहती है मेरी चलेगी, नहीं नहीं सिर्फ अल्लाह और उसके रसूल की चलेगी| मुरखेबा शरई यानी इस बात का अहसास के अल्लाह हमें देख रहा है, ये अहसास ज़ुल्म व सितम वग़ैरा से रोकता है, और बहू व सास एक दूसरे के खिलाफ साज़िश करने से रुक सकते है, क्यों के अल्लाह देख रहा है|

14) **“खूलू खौलन सदीदा”** शादी ब्याह में कई तरह के झूठ बोले जाते है, सच छुपाया जाता है, रूप, रंग, घर ग्रहस्ती, तनखा वग़ैरा, बहरहाल जो भी ऐब हो हर चीज़ ज़ाहिर कर देना चाहिए, चाहे कुछ नुख्सान हो जाए, मगर फौरन तलाख से बच जाओगे| **“युस्लिह लकुम आमालुकुम”** सच बोलने से काम बिगड़ते नहीं बल्के सवर जाते है|

- **निकाह आसान और मुख़्तसर मुद्दत में ख़तम किया जा सकता है :**

  - खाजी ने कागज़ात की खाना पूरी पहले ही मुकम्मिल कर रखी हो तो निकाह सिर्फ आदे घंटे में ही मुकम्मिल हो सकता है|
  - वली की रजामंदी, दो गवाहों की मौजूदगी, लड़का और लड़की का ईजाब व खुबूल, ये सब सिर्फ आदे घंटे में अंजाम दिया जा सकता है, जिसका मतलब ये हुआ के : “सिर्फ आदे घंटे में निकाह हो सकता है” इन शा अल्लाह|

- निकाह के वख्त किये गए शर्तो वादों की जायज़ व ना जायज़ खिसमे :
  नोट : बाज़ शर्ते वादे सही है और उनकी दिफा ज़रूरी है और बाज़ शर्ते वादे फासिद लेकिन अख्द ए निकाह को नहीं तोड़ते, सिर्फ शर्त साखित होती है, जबके बाज़ शर्ते वादे फासिद भी है और निकाह को बातिल कर देते है|

  1. जायज़ शर्ते वादे : (अगर मर्द मान ले जैसे) :

  1) शौहर से ना ले जाए|
  2) तालीम की तकमील या इसरार|
  3) मुस्तखिल घर|
  4) जायज़ काम या कारोबार की इजाज़त|
  5) खाविंद की मांग|
  6) मर्द के लिए जायज़ है के वो शर्त लगाये बारी और नुफ्खे में नरमी के लिए लेकिन मना हमल की शर्त नहीं लगा सकते|
  ये ऐसे हुखूख है जो ना पूरे होने पर माफ़ भी किये जा सकते है या गिरिफ्त करते हुए हख फसह को तलब किया जा सकता है|

  2. ना जाएज़ शरायेत वादे :

- पहली बीवी से तलाख का मुतालबा (निकाह सही है लेकिन पहली बीवी को तलाख देना लाजिम नहीं क्यों के शर्त फासिद है| **(इब्ने बाज़)**

  3. ना जाएज़ शर्ते वादे जो फासिद भी है और निकाह को बातिल भी कर देते है :

  1) निकाह शघार (शर्त लगाकर शादी करने की ममनू खिसम)

(महर बाँधा गया हो या ना हो महज़ शर्त लगाने से ही निकाह बातिल हो जाता है, शर्त ये के बदले में अपनी लड़की या बहन या अपनी निगरानी में पाए जाने वाली लड़की को दूंगा| **(इब्ने बाज़)**

2) किसी दूसरे के लिए औरत को हलाल करने के लिए निकाह|

3) निकाह मता|

- मुन्किरात व मुखालिफत जिनसे बचना ज़रूरी है :

1) बिला वजह शरई निकाह ना करना और रह्बानियत इख्तियार करना मना है|
2) बहुत ज्यादा महर बांधकर माशरे को तकलीफ में डालना|
3) दावत में सिर्फ मालदार को बुलाना और ग़रीब को ना बुलाना|
4) टइम बर्बाद करना, वख्त की पाबंदी ना करना|
5) बिला वजह और यादगार तसावीर लेना|
6) नाचना|
7) गाना
8) मौसिखी
9) ट्रैफिक और रास्ते खराब करना या रूकावट बनना|
10) लड़के का सोना पहनना|
11) शराब|
12) मर्द व औरत का एक दुसरे की मशाबहत इख्तियार करना|
13) इख्तेलात
14) फुजूल खर्ची
15) सहरा बाँधना|
16) बातिल तरीखे से माल खना और जहेज़|
17) बरात के साथ बैंड बाजा|
18) खुतबे से पहले तजदीद कलिमा करवाना|
19) हाज़िरीन निकाह को चवारे तख्सीम करने को लाजिम समझना|
20) जूता चप्पल की चोरी की रस्म|
21) पैर से दूध का प्याला गिराकर घर में दाखिल होने की रस्म|
22) खुरआन सर पर रख कर घर में दाखिल होने की रस्म|
23) मुह दिखाई या घर भरानी या छल्ला की रस्म शादी और ज़च्गी के बाद|
24) महरम में शादी ना करना|
25) तलाख की नियत से निकाह करना|
26) अजनबी औरत से मुसाफा|
27) अपनी बीवी को तलाश करने के लिए औरतो में चले जाना|
28) टाइट कपडे पहनना|
29) मर्द का टखने से नीचे कपडे लटकाना|
30) दाड़ी मुंढाना|
31) औरत का खुशबू लगाना|
32) औरत की बे पर्दगी|

33) औरत का बारीक या चुस्त कपडे पहनना|
34) पलके उखाड़ना (इलाज, ऐब या ज़रर दूर करने की नियत से चेहरे या पलकों से कुछ बाल निकालना जायज़ है, लेकिन जेब व जीनत के लिए नहीं)|
35) बालो में बाल लगाना|
36) टाटू बनाना|
37) शादी को बाखी रखने की घर्ज़ से वही रस्मे / मखसूस अन्घूटी / पत्थर / छल्ला / माला / काली पोत का लच्चा / तावीजात|

C. निकाह के बाद (After Nikah)

- निकाह की रात के आदाब :

1) बीवी को कोई तोहफा देना| **(अरवा उल घलील:1601)**
2) बीवी की दिल जोई के लिए कुछ खाने को पेश करना खुसूसन दूध| **(अहमद:27591)**
3) बीवी के सर पर हाथ रख कर दुआये बरकत करना :
अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक खैरहा व खैर मा जबल्तहा अलैहि व अऊज़ु बिक मिन शर्रिहा व मिन शर्रि मा जबल्तहा अलैहि (अबू दावूद:2160)
तरजुमा : "ऐ अल्लाह! मै तुझसे इसकी भलाई और इसकी जबलत का ख्वास्तगार हूँ, ऐ अल्लाह! इसके शर और इसकी जबलत के शर से तेरी पनाह माँगता हूँ|"
4) दोनों का इकठ्ठे दो रकात नमाज़ अदा करना (औरत पीछे रहे और शौहर आगे)| **(मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा:17156)**
5) जिमा के वख्त दुआ करना:
बिस्मिल्लाही, अल्लाहुम्म जन्निब्नशैतान, व जन्निब्नशैतान मा रज़खतना (बुखारी:141)
तरजुमा : "अल्लाह के नाम के साथ शुरू करता हूँ| ऐ अल्लाह! हमें शैतान से बचा और शैतान को उस खैर से दूर रख जो तू (इस जिमा के नतीजे में) हमें अता फरमाये|"

- ये दुआ पढने के बाद (जिमा करने से) मिया बीवी को जो औलाद मिलेगी उसे शैतान नुख्सान नहीं पंहुचा सकता|

6) दोबारा जिमा करने से पहले वजू करना|
7) जिमा के बाद घुस्ल या वजू करके सोना| (आदाब उल ज़िफाफ उल अल्बानी)

- घुस्ल ए जनाबत का तरीखा मंदर्जे जेल है : **(मुस्लिम:332)**
  - हातो को धोकर अपनी शर्म गाह और जहां नजासत लगी हो उसे धोये|
  - फिर मुकम्मिल वजू करना|
  - पाव वजू के आखिर में धोना या घुस्ल के आखिर में, दोनों तरह जायज़ है|
  - फिर तीन मरतबा चुल्लू भरकर सर में पानी डाले और सर को मले हत्ता के बालो की जड़े तर हो जाए|

- औरतो के लिए ज़रूरी नहीं के वो घुस्ल ए जनाबत के लिए अपने बाल खोले| अलबत्ता हैज़ व निफास के घुस्ल के लिए सर के बाल खोलना ज़रूरी है|
- फिर अपने जिस्म की दाए जानिब और फिर बाये जानिब पानी बहाए|

- वलीमा की दावत :

1) वलीमा करना वाजिब है| **(बुखारी:5167, शेख बिन बाज़)**
2) वलीमा की दावत खुबूल करना वाजिब है, इल्ला ये के कोई उजरे शरई या मजबूरी हो| **(बुखारी:5173)**
3) बिला वजह वलीमा की दावत खुबूल ना करना मासियत है| **(बुखारी:5177)**
4) वलीमा में ग़रीबो और मुहताजो को भी दावत देनी चाहिए| **(मुस्लिम:1432)**
5) वलीमा फ़ौरन अख्द ए निकाह के बाद जिम से पहले या जिमा के बाद किया जा सकता है (शेख सालेह फौजान), लेकिन खिलवत सहीहा के बाद वलीमा कर लिया जाए तो इख्तेलाफ से बाहर निकल जाते है और ये मुस्तहब है (सफी उर रहमान मुबारकपूरी शरह बुलूघुल मराम)
6) जिन सूरतो में दावत वलीमा खुबूल नहीं किया जा सकता है :
   - वलीमा की दावत में मुन्किरात यानी गाना, बजाना और रख्स वग़ैरा का इंतेज़ाम हो|

- शौहर के हुखूख :

1) हख ए जौजियत की अदायगी| **(तिरमिज़ी:1160)**
2) शौहर की खवामियत की अदायगी| **(सूरा निसा:34, तिरमिज़ी:1159)**
3) शौहर की इतात (इस्लामी दायरे में)| **(इब्ने माजह:4163)**
4) शौहर के लिए मददगार बने (इस्लामी दायरे में)| **(तिरमिज़ी:1163)**
5) ग़म, तकलीफ और बुरे हालात में एक दूसरे के लिए तसल्ली का जरिया बने| **(बुखारी:2297)**
6) शौहर की ग़ैर मौजूदगी में अपनी इज्ज़त और उसके माल की हिफाज़त| **(हाकिम:2682)**
7) बिला उज्रे शरई शौहर की इजाज़त के बग़ैर उसका माल खर्च ना करना| **(तिरमिज़ी:670)**
8) अपना माल खर्च करते वख्त शौहर से मशवरा लेना बेहतर है, ताके माहौल खुश गवार बना रहे| **(अबू दावूद:3547)**
9) शौहर जिसे ना पसंद करे उसे घर में दाखिल ना करना| **(बुखारी:5195)**
10) शौहर की ना शुक्री से इजतेनाब| **(बुखारी:304)**
11) शौहर की इजाज़त के बग़ैर नफ्ली रोज़ा ना रखना| **(बुखारी:5195)**
12) घर से बाहर निकलना हो तो शौहर की इजाज़त का ख़याल रखा जाए| **(सूरा अहज़ाब:33)**
13) शौहर को घर तब्दील करने की ज़रुरत हो तो उसका साथ दे| **(सूरा तलाख:6)**
14) शौहर को ये हख भी हासिल है के वो ब एक वख्त एक से ज्यादा यानी चार तक बीविया रख सकता है| **(सूरा निसा:3)**
15) हख ए तलाख (जुल्म व सितम के हल का इस्लामी तरीखा)| **(सूरा तलाख:1)** बिला वजह तलाख का इस्तेमाल खियामत के दिन खाबिले बाज़ पुर्स है|
16) हख व राहत| **(सूरा निसा:12)**

- बीवी के हुखूख :

  1) हख जौजियत की अदायगी| **(बुखारी:1975)**
  2) अय्यामे महावरी में इजतेनाब| **(सूरा बखरह:222)**
  3) रमजान के दिनों में रोज़े की हालत में इजतेनाब| **(बुखारी:1937)**
  4) दुबुर में जिमा से इजतेनाब| **(अबू दावूद:1894)**
  5) महर की अदायगी (खवामत का तखाज़ा)| **(सूरा निसा:4)**
  6) रिहाइश का बंदोबस्त (खवामत का तखाज़ा)| **(सूरा तलाख:6)**
  7) नान नुफ्खा का बंदोबस्त (खवामत का तखाज़ा)| **(सूरा तलाख:7)**
  8) कपड़ो का बंदोबस्त| **(अबू दावूद:2142)**
  9) हुस्ने सुलूक| **(सूरा निसा:19)**
  10) बीवी के लिए मददगार बने|
  11) ग़म, तकलीफ और बुरे हालात में एक दूसरे के लिए तसल्ली का जरिया बने| **(बुखारी:2297)**
  12) बीवी की इज्ज़त व आबरू की हिफाज़त| **(सहीह उल जामे:3314)**
  13) बीवी को ज़रूरी हद तक तालीम हासिल करने की इजाज़त दे| **(सूरा तह्रीम:6)**
  14) मुताद्दिद बीविया हो तो अदल व इन्साफ करे| **(सूरा निसा:3)**
  15) नाराजगी की सूरत में बीवी को घर से ना निकालना| **(इब्ने माजह:1850)**
  16) हख खुला (ज़ुल्म व सितम के हल का इस्लामी तरीखा)| **(बुखारी:5273)**
  ज़रुरत के वख्त बीवी को खुला का हख है, बिला वजह खुला तलब करना निफाख की अलामत है|
  17) हक विरासत| **(सूरा निसा:12)**
  18) तलाख की सूरत में इज्ज़त के साथ रवाना करना ज़लील ना करना| **(सूरा बखरह:231)**

- दुल्हा और दुल्हन के लिए चंद नसीहते :

1) बीवी के साथ अच्छे अंदाज़ में गुज़र बसर करे|

2) उसकी इज्ज़त व तकरीम करे|

3) उसके रिश्तेदारों के साथ भी हुस्ने सुलूक करे|

4) उसको आराम व राहत पहुचाये|

5) दुल्हन को चाहिए के वो अपने शौहर की खिदमत और उसके हुखूख की अदायगी में कोताही ना करे|

6) बेजा घीरत और शक व शोबा में न पड़े|

7) ये समझे के उसकी इज्ज़त शौहर से है|

8) घुस्से की हालत में मुह बंद रखे|

9) सफाई सुथराई, जेब व जीनत, बनाव सिंगार, खुशबू वग़ैरा का इस्तेमाल अपने शौहर के लिए करे|

10) घर में इतर का इस्तेमाल करे|

11) सफाई सुथराई में इन उमूर की बड़ी अहमियत है, जिन्हें कुतुबे अहादीस में सुनन फितरत के उनवान से ज़िकर किया गया है : खतना, ज़ेरे नाफ मूंडना, मूछे कतराना, नाखून काटना और बग़ल के बाल उखेड़ना|

- निकाह के बाद बाज़ नसीहते और अहम तालीमात :

1) मिया बीवी में सुलह कराने के लिए झूठ बोलने की रुखसत है| **(मुस्लिम:1605)**
2) बीवी बच्चो पर खर्च करना अफज़ल सद्खा है| **(मुस्लिम:995)**
3) दुल्हा दुल्हन को चाहिए के अपने सुसराली रिश्तेदारों से सिलह रहमी करे, जिस का सवाब ये है के उमर और रिज्ख में कुशादगी अता की जाती है और अल्लाह की रहमत के हख्दार हो जाते है| **(बुखारी:2067)**
4) जिस तरह मर्द औरत के ज़रर से बचने के लिए अपना दिफा खुद कर लेता है (जो हुदूद उसे बताये गए है उसमे रहकर) उसी तरह अगर औरत अपने शौहर के ज़रर से बचना चाहे तो इस्लाम ने माखूल रास्ता बताया है, वो ये के औरत अपनी बात जिम्मेदारो या खाजी या हाकिम तक ले जा सकती है|
5) आप ﷺ ने अपनी ज़िन्दगी में कभी अपनी किसी बीवी को नहीं मारा| (-------------) आप ﷺ ने तो कभी गाली भी नहीं दी|
6) तोहफे वापिस लेने से बचना ज़रूरी है|
7) इमाम अल्बानी रहिमहुल्लाह ने तीन शर्तो पर मवाने हमल की इजाजत दी है :
अ) ग़ालिब इमकान हो के औरत को ज़रर कसीर व ज़रर अज़ीम लाहख हो सकता है|
आ) मौत का यखीनी ख़तरा|
नोट : दो सिखा डाक्टर इस बात पर गवाही दे तब ही माना जाएगा|
इ) हख इस्तेमता : बीवी और शौहर का मख्सद इस्तेमता हो तो वो अपना ये हख इस्तेमाल कर सकते है| **(आदाबे अल ज़िफाफ)**
8) जायज़ व हलाल वादा पूरा करना ज़रूरी है|
9) शौहर बीवी एक दूसरे के वालिदैन का अदब व अह्तेराम करे और हुस्ने सुलूक से पेश आये|
10) माँ बाप को चाहिए के शौहर बीवी के इस रिश्ते को competition (तनाफुस) के तरह ना ले बल्के compliment (मददगार) के तौर पर ले|
11) सास बहू और ननद भाभी के रिश्ते को आखिरत की कामयाबी का जरिया बनाये, ना के दुनिया के लालच या एक दूसरे से मुखाबला आराई, साज़िश, घीबत, चुघल खोरी, बोहतान व इलज़ाम में सर्फ़ ना करे|
12) महंगे रोख्खे बेजा खर्च में आते है|
13) शादी के बाद जुमागी के नाम से मुसलसिल चार या पांच हफ्ते दावते करना नाजायज़ रस्म है|
14) शादी के बाद तफरीह की जायज़ व ना जायज़ हुदूद:

शादी के बाद मिया बीवी सैर व तफरीह के लिए जाते है तो जायज़ है अगर वो हलाल तफरीह हो, शरई हुदूद में हो, अमर बिल मारूफ व नहीं अनिल मुनकर बजा लाते हुए और इस्राफ व तब्जीर से बचते हुए, लेकिन अगर मग़रबी तहजीब का honeymoon या शहर असल या कोई रस्म या लाजमी समझ कर या तश्बा की गर्ज़ से जाना मग़रबी तहजीब की अंधी तख्लीद है|

- कामयाब शादी के औसाफ व उसूल :

1) अलाल ताजाम – हुखूख व वाजिबात का मिया बीवी दोनों को अहसास रहे|
2) अलल हाताम – आपस में एक दूसरे का एहतेराम करना चाहिए|
3) तौहीद रिसालत आखिरत|
   - ✓ अल्लाह ही की इबादत और रसूल की इतात|
   - ✓ घर में सिर्फ अल्लाह और रसूल की चलेगी, ना शौहर की ना बीवी की| तौहीद का एक तखाज़ह है "मराखिबा" यानी अल्लाह देख रहा है, जब ये तसव्वुर ताज़ा रहेगा तो खुद ब खुद शरारत, साज़िश और एक दूसरे को सताने का ज़हन ख़तम होकर संजीदा हो जाएगा, नमूना तो मुहम्मद ﷺ जैसे मिसाली शौहर और उम्महातुल मोमिनीन जैसे कामयाब अज्वाजे मुतह्हरात और आखिरत की पूछ का डर 'फमै यामल मिस्खाल...... मालिकी यौमिद्दीन का अहसास, इन्सान को ज़िम्मेदार बनाता है, और ज़िन्दगी सहल हो जायेगी| इन शा अल्लाह

   4) तसामह – एक दूसरे के लिए आसानी, नरमी, और दरगुज़र का मामला|
   5) मता घुरूर से बचना, हमेशा हखीखत की दुनिया के हिसाब से सोचना और तसव्वुराती दुनिया से बचना, अक्सर तसव्वुराती दुनिया धोका देती है, ये दुनिया धोके की जगह है, यहाँ हर चीज़ मिलना मुश्किल है, वो सिर्फ जन्नत ही है जहाँ हर चीज़ बिला हद व हिसाब मिलती है ये दुनिया मता अल घुरूर है|
   हखीखी दुनिया के वसाएल में तवक्कल, तख्वा, सिद्ख, अमानत, पाक व खुश लहजा, खिनाअत, सबर, तहम्मुल, तसामह, मखासिमत (झगडा) से दूरी, मौदत, उल्फत, रहमत व शफख्खत, अदल व अहसान, फहश व मुन्करात से बचना, तावुन अलल बिर्र, अदम ताव्वुन अलल इसम|
   6) तवासिल सादिख मा इस्तेमरार, बात चीत हर हाल में जारी रखो, हर मशवरे में एक दूसरे को शरीक रखो, एक दूसरे को अपना मुआविन, रफीख और मददगार समझो, जन्नत हासिल करने के लिए एक दूसरे की मदद करो, नाराजगी में बात चीत बंद कर लेना एक दूसरे से बे परवाह हो जाना, अनानियत, घुरूर, घमंड, खियानत, ज़ुल्म, झूठ, बुह्तान, शक व शोबा, जासूसी, एक दूसरे का ख़याल ना रखना, रिश्तेदारों के साथ बद सलूकी, अज्वाजी ज़िन्दगी के लिए ये सब चीज़े ज़हर खातिल है|
   7) अपना ना सोचे बच्चो का सोचे, आप के झगडे से उन पर कितना बुरा असर पड़ता है, उम्मत और इंसानियत का सोचे, आप की सलाहियत किन अच्छे कामो में लगती है और किन बेकार झगड़ो में लैफ गुज़र रही है|
   एक बड़े vision, मख्सदे हयात, इंसानियत के लिए दर्द लेकर चलना, इस्लाम की नश्र व इशात, मख्सदे ज़िन्दगी का खियाम अबूदियत|
   अगर आदमी मख्सदी ज़िन्दगी गुजारेगा तो मामूली तनज़ियात खुद ब खुद ख़तम हो जायेंगे|

घर में तालीम, तदब्बुर, तफ्कर, तज्कीर ए खुरआन और फहम ए हदीस व शरियत का माहौल बनाये| इल्म, अमल, दावत व इस्लाह और सबर का माहौल बनाये|
8) माहिरीन ए नफ्सियात और समाजी माहिरीन पांच नुक्ते अक्सर बताते है :
1. उसूल में नरमी और समझौता, सख्त लहजा और सख्ती से हुखूख के मुतालबे से बचे| मुस्कुराहट से हल करे शिद्दत के हालात को| मुस्कुराहट गुस्से की आग को बुझा देती है|
2. रोजाना की तरतीब से हट कर कुछ खुश गवारी का माहौल खायम करले, हलाल तरीखे से जदीद अंदाज़ अपनाए|
3. तवासिल – ताल्लुखात ना तोड़े|
4. --------- (हर एक दूसरे को एहतेराम दे)
5. अल सिखा (हमारा एक दूसरे पर मुकम्मिल ऐतेमाद, पूरा भरोसा, हमारी अज्वाजी ज़िन्दगी को दवाम बखश्ता है और शुकूक व शुब्हात उसका गला घोंट देती है)

- शौहर और बीवी की हट धरमी का इलाज :

1) इनाद, हट धरमी महमूद कामो में खाबिले तारीफ़ है और मज्मूम चीजों में खाबिल मज़म्मत|
2) हट धरमी, बडाई की अलामत नहीं बल्के कमजोरी की अलामत है, कमजोरी छुपाने के लिए आदमी या औरत ये रास्ता इक्तियार करता है|
3) जो लोग हालात और शक्सियात के हिसाब से अपने आप को फिट नहीं कर पाते वो लोग हट धरमी के ग़लत रास्ते पर चलते है|
4) हट धरमी रिश्ते को तोड़ने का सबब बनती है, जबके लचक और दरगुज़र रिश्ते को बखा बखश्ते है|
5) कभी हट धरमी विरसा में आती है और उसको सही से समझना नहीं आता, इसलिए इस पर मेहनत करके अच्छाई और बुराई में फर्ख करना पड़ेगा, तहखीर राये और अदम मशवरा की ज़िन्दगी से बचना उसका हल है|
6) मुहब्बत से महरूमी का शिकार जोड़े हट धरमी का शिकार होते है|
7) हवार यानी discussion करके उसको हल कर सकते, इसी तरह दुआओ के साथ, ना के dictation हुकुम चलाने या उस्ताज़ बनने की कोशिश ना करे बल्के बाहम गुफ्तगू से माफ़ करने के जज्बे से हर मसला हल हो जाता है|
8) हलीम आता है तह्लीम है, गुस्सा पीन इसे गुस्सा पीने की आदत पड़ जाती है|
9) तकब्बुर करने का बुरा अंजाम होता है, फिरऔन, आद व समूद, खौमे लूत, खौमे नूह की हट धरमी का अंजाम क्या हुआ? इस पर नज़र रखने से तकब्बुर में कन्ट्रोल आता है| अल्लाह की किबरियायी और मुहम्मद ﷺ की इत्तेबा को लाजिम पकड़ ले|
मौदूत व रहमत को अपनाए| **(30:21)**
इब्ने खय्यिम रहिमहुल्लाह फरमाते है : चार महलक बीमारियों से बचे : 1. तकब्बुर, 2. हसद ममनू, 3. ग़ज़ब शदीद, 4. शहवत|
नोट 1 : इल्म ए निकाह सीखना ज़रूरी है| **“तलबुल इल्मि फरीज़तन अला कुल्ली मुस्लिम” (इब्ने माजह:224)** के तहत ये इल्म : हुखूख उल जौजैन, हलाल व हराम, जायज़ व ना जायज़ में तमीज सिखाता है| और तखाज़ा इल्म ये है के आदमी घुस्ल शरई, तहारत के मसायेल के साथ अज्वाजी मसायेल भी सीख ले|

बुलूघत और घुस्ल शरई के मफ्सिल मालूमात अहले इल्म से सीखे|
नोट 2 : निकाह का लघ्वी माना : निकाह अरबी कलिमा --------- से है, इसी से तनाकहत अल शजार यानी गुंजान जंगल या बाग के है, जिसमे दरख़्त की टहनिया आपस में दाखिल होती है| निकाह के ज़रिये अजनबी मर्द व औरत का मिलाप होता है और वो दख सकह के साथी बन जाते है और अज्वाजी ताल्लुखात खायम करते है| निकाह ----- अख्द व जिमा भी इस्तेमाल होता है|
"--------" से जिमा और असबाब निकाह दोनों मुराद लिए गए है| **(फतहुल बारी ला बिन हजर:108/9)**

- लम्हा फिकरिया व सबख :
  हमने आसान चीज़ को मुश्किल बना दिया है| निकाह के रुसूमात में बे जा खर्च की तयारी और कमाई के लिए पांच साल इंतज़ार और आइन्दा के मजीद 5 साल खर्जो की अदायगी में गुज़ार दे| शादी, सादी हो ना के बरबादी|
  उमर दराज़ मांग के लाये थे चार दिन
  दो आरज़ुओं में कट गए दो इंतज़ार में

  नोट : निकाह का ताल्लुख चूके रिश्ते खायम करने से है लिहाज़ा हुखूख वालिदैन और दीगर रिश्तो का ज़िकर बतौर याद देहानी किया जा रहा है|
  अल्लाह के फज़ल के बाद वालिदैन की मुहब्बत और सरपरस्ती से तुम शादी की उमर को पहुच गए, अल्लाह का अहसान मानो और वालिदैन का शुक्रिया अदा करो|

- **वालिदैन के हुखूख :**

  1) वालिदैन का एहतेराम करना| **(सूरा बनी इस्राईल:23,24)**
  2) वालिदैन का हुकुम मानना| **(सूरा लुख्मान:14,15)**
  3) वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना| **(सुनन अबू दावूद:5143, सहीह)**
  4) वालिदैन की ज़रूरियात जिंदगी का ख़याल रखना| **(सूरा बखरह:215)**
  5) वालिदैन को गाली देने से परहेज़ करना| **(सहीह मुस्लिम:313)**
  6) वालिदैन के लिए मघ्फिरत की दुआ करना| **(सूरा बनी इस्राईल: 23,24)**

- **कुछ मिसाले ऐसे कामो की जो वालिदैन को तकलीफ देने वाले है, इसलिए इनसे बचना वाजिब है:**

  1) उन्हें रुलाना|
  2) उन्हें डराना|
  3) उनके दिलो में उदासी भर देना|
  4) उन्हें आँखे दिखाना|
  5) उनकी ना फ़रमानी करना|
  6) उनकी बातो को रद्द करना|
  7) अपने जाती मसायेल का बिला वजह परेशानी की गर्ज़ से इज़हार करना|

8) उनके साथ कंजूसी का मामला करना|
9) उन पर किये गए अपने अहसानात जताना|
10) उनकी मौत की तमन्ना करना| **(----------)**

- **रिश्ते नाते की अहमियत :**

  - रिश्ते अल्लाह ने बनाये है, ये अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है| इसलिए इनको जोड़े रखने की सख्ती से तालीम दी गयी है, जैसा के फरमान है :
    "जो कोई ये चाहे के उसके रिज्ख में फराखी और कुशादगी हो, और दुनिया में उस के खदम तादेर रहे (यानी उसकी उमर दराज़ हो) तो वो अपने रिश्तो को जोड़े रखे|" **(सहीह बुखारी:5985)**
    "रहम करने वालो पर रहमान (अल्लाह) रहम करता है, लिहाज़ा तुम ज़मीन वाली मख्लूख के साथ रहम का मामला करो, आसमान वाला तुम पर रहम फ़रमायेगा| **(सुनन अबी दावूद:4941)**
  - असल सिले रहमी ये बयान की गयी के जब रिश्ते टूटने लगे तो उसे और मजबूती से थाम लो, जैसा के बयान है :
    "वो आदमी सिला रहमी का हख अदा नहीं करता है जो बदले के तौर पर सिला रहमी करता है, सिला रहमी का हख अदा करने वाला दर असल वो है जो इस हालत में भी सिला रहमी करे जब उसके खराबतदार उसके साथ खता रहमी (और हख तलफी) का मामला करे|" **(सहीह बुखारी:5991)**
  - जो बंदा रिश्ते जोड़ने में लगा रहे अल्लाह की मदद उसके शामिले हाल रहेगी :
    "ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे कुछ रिश्तेदार है, मै उनसे जुड़ता हूँ, लेकिन वो मुझसे कटते है, मै उनके साथ अच्छा सुलूक करता हूँ, वो मेरे साथ बद सुलूकी करते है| फ़रमाया : अगर यही बात है जो तुमने बयान की तो तुम उनका मुह ख़ाक से भरते हो, जब तक तुम इसी तरीखे पर कारबंद रहोगे अल्लाह की जानिब से बराबर तुम्हारे लिए मददगार (फ़रिश्ता) रहेगा|" **(सहीह मुस्लिम:2558)**
  - और जो खता रहमी करे उसके लिए वईद बयान की गयी है :
    "रिश्ते अर्श से लटका हुआ है, तो अल्लाह ने फरमाया : जो तुझे जोड़ेगा मै उसे जोडूंगा, और जो तुझे काटेगा मै उसे काटूंगा|" **(सहीह बुखारी:5988)**
    "खता रहमी करने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा|" **(सहीह बुखारी:5984)**
    "अल्लाह उस पर रहम नहीं फरमाता, जो लोगो पर रहम नहीं करता|" **(सहीह बुखारी:7376)**
    "रहम का जज्बा बद बख्त के सिवा और किसी के दिल से नहीं निकाला जाता|" **(सुनन तिरमिज़ी:1923)**

    - **तलब औलाद की दुआये :**

औलाद के लिए दुआ और नज़रे बद से बचाव :

1) रब्बना हब लना मिन अज्वाजिना व ज़ुर्रियातिना खुर्रत आयुन वज अलना लिल मुत्तखीन इमामा| (सूरा फ़ुरखान:74)
तरजुमा : ऐ हमारे परवरदिगार! तू हमें हमारी बीवियों और औलाद से आँखों की थंडक अता फरमा और हमें परहेजगारो का पेशवा बना|
2) रब्बिज अल्नी मुखीमत सलाति व मिन ज़ुर्रियती, रब्बना व तखब्बल दुआ| (सूरा इब्राहीम:40)
तरजुमा : ऐ मेरे पालने वाले! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख और मेरी औलाद से भी, ऐ हमारे रब मेरी दुआ खुबूल फरमा|
3) वज नुब्नी व बनिय्यी अन ताबुदल अस्नाम| (सूरा इब्राहीम:35)
तरजुमा : मुझे और मेरी औलाद को बुत परस्ती से पनाह दे|
रब्बि हब्ली मिनस्सालिहीन| (सूरा साफ्फात:100)
तरजुमा : ऐ मेरे रब! मुझे नेक बख्त औलाद अता फरमा|
4) रब्बि हब्ली मिल्लदुन्क ज़ुर्रियती तय्यिबह, इन्नक समीउद्दुआ| (सूरा आले इमरान:38)
तरजुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे अपने पास से पाकीज़ा औलाद अता फरमा, बेशक तू दुआ का सुनने वाला है|
5) रब्बि अव्ज़ीनी अन अश्कुर नीमतकल्लती अन अम्त अलय्य व अला वालिदय्य व अन आमल सालिहा तरज़ा व अस्लिह ली फी ज़ुर्रियती इन्नी तुब्तु इलैक व इन्नी मिनल मुस्लिमीन| (सूरा अह्खाफ:15)
तरजुमा : ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे तौफीख दे के मै तेरी इस नेमत का शुकर बजा लाऊ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर इनाम की है और ये के मै ऐसे नेक अमल करू जिनसे तू खुश हो जाए और तू मेरी औलाद भी सालेह बना, मै तेरी तरफ रुजू करता हूँ और मै मुसलमान में से हूँ|
नोट : जिद्दी बच्चो को सालेह और संजीदा और अच्छे बनाने के लिए ये दुआ बड़ी मुफीद है, बिइज़निल्लाह|
6) बच्चो पर रुखय्या करते रहे : अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मह, मिन कुल्लि शैतानी व हाम्मह, व मिन कुल्लि ऐनिन लाम्मह| (सहीह बुखारी:3371)
तरजुमा : "मै पनाह मांगता हूँ अल्लाह के पूरे पूरे कलिमात के ज़रिये हर एक शैतान से और हर ज़हर मिले जानवर से और हर नुख्सान पहुचाने वाली नज़रे बद से|"
7) और अपन रिश्ते की हिफाज़त के लिए : "अऊज़ु बिल्लाही मिनल ऐन" पढ़ते रहे|

- **औलाद की अच्छी तरबियत करना :**

औलाद की तरबियत शादी से पहले दुल्हा दुल्हन के इंतेखाब से ही शुरू हो जाती है| इब्ने खाय्यिम रहिमहुल्लाह फरमाते है :
जिसने अपने औलाद की अच्छी तरबियत करने में कोताही की और इसको नज़र अंदाज़ कर दिया, तो उसने बहुत बड़ी ग़लती की, क्यों के औलाद में अक्सर फसाद वालिदैन ही की तरफ

से आता है, और अगर उन्होंने बेपरवाही से काम लिया और दीन के फरायेज़ व सुनन की तालीम ना दी तो ऐसी औलाद ना तो अपने आप को फाइदा दे सकेगी और ना अपने वालिदैन के लिए खैर का जरिया साबित होगी| एक बाप ने अपने बेटे को उसकी बदसुलूकी पर डाटा तो उसने कहा : अब्बूजान! आप ने बचपन में मेरा हख ए खिदमत अदा नहीं किया तो मैंने बड़े होकर ना फ़रमानी की है, आप ने मुझे बचपन में ज़ायह किया तो मै आप को बुढापे में ज़ायह कर रहा हूँ|
एक अहम बात ये भी है के तरबियती खत्ल (अदम तरबियत) जिस्मानी खत्ल से बुरा है| **(सूरा बखरह:191)**

- **औलाद की अच्छी तरबियत ना करने के नुख्सानात :**

1) वालिदैन इन्तेखाल के बाद औलाद की दुआओ से महरूम रहेंगे|
2) वो वालिदैन माशरे में इज्ज़त की निगाह से देखे नहीं जाते|
3) मुख्तलिफ हालात में वालिदैन को शर्मिंदगी का सामना करना पड़ेगा|
4) बुढापे में बच्चो के सुकून से महरूम और उनके धोके से दोचार|
5) बच्चो का विरासत के मसले को लेकर लड़ना और झगड़ना|
6) अदम तरबियत याफ्ता बच्चे अपने निकाह के बाद अज्वाजी ज़िन्दगी को बरखरार नहीं रख सकते है|
7) खाविंद में जो इख्तेलाफात चले आ रहे है उनका बाखी रहना और मजीद बढ़ना|
8) खौम व मिल्लत के सरमाये का नुख्सान|
9) खियामत के दिन अल्लाह की बाज़ पुर्स|
10) वो वालिदैन धोका देने वाले है जो अपने बच्चो की सही तरबियत नहीं करते|
11) बाप के जनाज़े पर बच्चा दुआ याद ना होतो पढ़ेगा कैसे?

- **रिश्तो में मुहब्बत कैसे पैदा करे? (------)**

1) एक दूसरे को सलाम करे| **(मुस्लिम:54)**
2) उनसे मुलाखात करने जाए| **(मुस्लिम:2567)**
3) उनके पास बैठने उठने का मामूल बनाले| **(सूरा लुख्मान:15)**
4) उनसे बात चीत करे| **(मुस्लिम:2560)**
5) उनके साथ लुत्फ़ व मेहेरबानी से पेश आये| **(सुनन तिरमिज़ी:1924, सहीह)**
6) एक दूसरे को हदिया व तोहफा दिया करे| **(सहीह जामे:3004)**
7) अगर वो दावत दे तो खुबूल करे| **(मुस्लिम:2162)**
8) अगर वो मेहमान बनकर आये तो उनकी जियाफत करे| **(तिरमिज़ी:2485, सहीह)**
9) उन्हें अपनी दुआओ में याद रखे| **(मुस्लिम:2733)**
10) बड़े हो तो उनकी इज्ज़त करे| **(सुनन अबू दावूद:4943, सुनन तिरमिज़ी:1920, सहीह)**
11) छोटे हो तो उन पर शफख्खत करे| **(सुनन अबू दावूद:4943, सुनन तिरमिज़ी:1920, सहीह)**
12) उनकी ख़ुशी व ग़म में शरीक हो| **(सहीह बुखारी:6951)**

13) अगर उनको किसी बात में इयानत दरकार हो तो उस काम में उनकी मदद करे| **(सहीह बुखारी:6951)**
14) एक दूसरे के लिए खैर ख्वाह बने| **(सहीह मुस्लिम:55)**
15) अगर वो नसीहत तलब करे तो उन्हें नसीहत करे| **(सहीह मुस्लिम:2162)**
16) एक दूसरे से मश्वरा करे| **(सूरा आले इमरान:159)**
17) एक दूसरे की घीबत ना करे| **(सूरा हुजुरात:12)**
18) एक दूसरे पर तान ना करे| **(---------)**
19) पीट पीछे बुराइया ना करे| **(--------)**
20) चुघ्ली ना करे| **(सहीह मुस्लिम:105)**
21) बुरे नाम ना निकाले| **(सूरा हुजुरात:11)**
22) ऐब ना निकाले| **(सुनन अबू दावूद:4875, सहीह)**
23) एक दूसरे की तकलीफों को दूर करे| **(सुनन अबू दावूद:4946, सहीह)**
24) एक दूसरे पर रहम खाए| **(सुनन तिरमिज़ी:1924, सहीह)**
25) दूसरो को तकलीफ देकर मज़े ना उठाये| **(सूरा मुतफ्फिफीन से सबख)**
26) ना जायज़ मुसाबिखत ना करे| मुसाबिखत करके किसी को गिराना बुरी आदत है| **(सहीह मुस्लिम:2963)**
27) नेकियो में सबख्खत और तनाफुस जायज़ है, जबके उसकी आड़ में तकब्बुर, रियाकारी और तहखीर खार फरमा ना हो| **(सूरा मुतफ्फिफीन:26)**
28) तमा, लालच और हिर्स से बचे| **(सूरा तकासुर:1)**
29) ईसार व खुरबानी का जज्बा रखे| **(सूरा अल हशर:9)**
30) अपने से ज्यादा आगे वाले का ख़याल रखे| **(सूरा अल हशर:9)**
31) मजाख में भी किसी को तकलीफ ना दे| **(सूरा अल हुजुरात:11)**
32) नफ़ा बक्श बनने की कोशिश करे| **(सहीह उल जामे:3289, सहीह)**
33) एहतेराम से बात करे| बात करते वख्त सख्त लहजे से बचे| **(सूरा आले इमरान:159)**
34) घायबाना अच्छा ज़िकर करे| **(तिरमिज़ी:2737, सहीह)**
35) गुस्सा को कंट्रोल में रखे| **(सहीह बुखारी:6116)**
36) इन्तेखाम लेने की आदत से बचे| **(सहीह बुखारी:6853)**
37) किसी को हखीर ना समझे| **(सहीह मुस्लिम:91)**
38) अल्लाह के बाद एक दूसरे का भी शुकर अदा करे| **(सुनन अबू दावूद:4811, सहीह)**
39) अगर बीमार हो तो इयादत को जाए| **(तिरमिज़ी:969, सहीह)**
40) अगर किसी का इन्तेखाल हो जाए तो जनाज़े में शिरकत करे| **(मुस्लिम:2162)**
फूल उठाने पर महक और गलाज़त उठाने पर बदबू आती है, अच्छी और बुरी मजलिसो की मिसाल ऐसी ही है, अल्लाह हमें रिश्ते खैर से निभाने की तौफीख अता फरमाये|

- नोट : शादी से पहले या दौरान या बाद महफ़िलो का सिलसिला जारी रहता है, लिहाज़ा महफ़िलो में अल्लाह का ज़िकर और दरूद पढने का माहौल बनाये : **सुबहानक अल्लाहुम्म वबि हम्दिक अशहदु अल्लाह इलाहा इल्ला अन्त, अस्तघफिरुक व अतूबु इलैक| (तिरमिज़ी:3433)**
  तरजुमा : "ऐ अल्लाह! तू पाक है, और तू अपनी सारी तारीफो के साथ है, नहीं है माबूद बर हख मगर तू ही और मै तुझी से मघ्फिरत तलब करता हूँ और तेरी ही तरफ रुजू करता हूँ|"

अरशद बशीर मदनी हफिज़हुल्लाह से टीवी & -------- सिरीस में पूछे गए सवालात के जवाबात

निकाह से पहले और निकाह के बाद 40 सवालात के जवाबात

Shaikh Arshad Basheer Umari Madani

Hafiz, Aalim, Faazil, Madina University, KSA. MBA
Founder & Director of AskIslamPedia.com
Chairman: Ocean The ABM School, Hyd.

I. निकाह से पहले

1. बुकलेट लिखने का पसे मंज़र (background) बताये?
2. निकाह से पहले, दौरान और बाद की तख्सीम समझाइये?
3. निकाह का हुकुम क्या है?
4. निकाह की अहमियत, फ़ज़ीलत और तर्घीब बयान कीजिये?
5. औसाफे जौजैन क्या हो, शादी का फैसला लेने से पहले?
6. इस्तेखारा और मश्वरह के बारे में बताये?
7. शादी में ताखीर होने की वजूहात क्या है?
8. शादी बोझ क्यों बन गयी?
9. महरम और ना महरम की पहचान बताये?
10. मुन्किरात शादी से पहले क्या क्या है जिनसे बचना ज़रूरी है?

II. निकाह के दौरान

11. शादी के अरकान, शुरूत, वाजिबात, सुनन और मुस्तहबात बयान कीजिये?
12. दौराने निकाह के आदाब और तालीमात बयान कीजिये?
13. खुतबे निकाह के अहम अस्बाख बयान कीजिये?
14. निकाह कितना आसान है?
15. निकाह के शर्तो की जायज़ और ना जायज़ शकले बयान कीजिये?
16. निकाह के दौरान के मुन्किरात जिकर कीजिये?

III. निकाह के बाद

17. निकाह की रात के आदाब बयान कीजिये?
18. वलीमा के अहकाम लिखे?
19. घुस्ल का तरीखा जिकर कीजिए?
20. निकाह से मुताल्लिख दुआओ का मतलब जिकर कीजिये?

21. मिया बीवी, माँ बाप और रिश्तेदारों के हुखूख बयान कीजिये?
22. दुल्हा दुल्हन को बयान की गयी नसीहते जिकर कीजिये?
23. निकाह के बाद के मसायेल पर रहनुमाई करे?
24. झगडे कंट्रोल करने के टिप्स क्या है?
25. फॅमिली प्लान के तीन शरायेत (condition) क्या है?
26. शादी के बाद के मुन्किरात बयान कीजिये?
27. कामयाब शादी के उसूल बयान कीजिये?
28. शौहर और बीवी में मुहब्बत और रहम दिली कैसे खायम हो?
29. हट धरमी का इलाज बयान कीजिये?
30. हुखूख उल इबाद की अहमियत बयान कीजिये?
31. खता रहमी (रिश्ते काटने) का गुनाह जिकर कीजिये|
32. उन्धा अखलाख की अहमियत बयान कीजिये?
33. वालिदैन के हुखूख शादी के बाद अदा करने में जो कमजोरी आती है उसको कैसे कंट्रोल करे? हुखूख वालिदैन के पस मंजर में बताइये?
34. शादी के बाद तलबे औलाद की दुआये? और जो परेशान है उनका रुखया जिकर करे?
35. औलाद की तरबियत कब से शुरू होती है?
36. जदीद दौर में बच्चो की तरबियत के चैलेंज को हल करने के पांच नुस्खे बताये?
37. औलाद की अच्छी तरबियत ना करने के नुख्सानात क्या है?
38. रिश्तो में मुहब्बत के 40 ज़रीन उसूल बयान कीजिये?
39. मजलिस ए निकाह के आदाब जिकर करे?
40. शादी आसान ना करे तो क्या नुख्सानात मुरत्तिब होते है?